।। अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत ।।

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव.

एम. ए. हिंदी – द्वितीय वर्ष

१९९३–९४, १९९४–९५ एवं १९९५–९६ के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

प्रश्नपत्र ५ : सामान्य स्तर : आधुनिक काव्य

उद्देश्य :–

* आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय देना ।
* आधुनिक काल के महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, नई कविता आदि विधाओं या प्रवृत्तियों के तात्त्विक स्वरूप का ज्ञान तथा इन विधाओं के विकासक्रम का परिचय कराना ।
* हिंदी की आधुनिक काव्यविधाओं के विकास के परिप्रेक्ष्य में उनके अध्ययन तथा समीक्षात्मक आस्वादन की दृष्टि देना ।

पाठ्यपुस्तके :–

–: प्रथमसत्र के लिए :–

१. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
[चिंता, श्रध्दा, लज्जा और आनंद सर्गों का अध्ययन]
२. उत्तर जय – नरेंद्र शर्मा, प्रका. – रामचंद्र ॲण्ड सन्स ।

–: द्वितीय सत्र के लिए :–

३. उर्वशी – रामधारी सिंह "दिनकर" उदयांचल प्रकाशन, पटना ।
४. नवधा – संपा. अज्ञेय और जगदीप गुप्त
प्रका. – भारतीय साहित्य २८६ चाणक्यपुरी मेरठ–१.

निम्नलिखीत कवि और उनकी कविताएँ –

* अज्ञेय– सभी कविताएँ
* भवानीप्रसाद मिश्र – "इस परिस्थिती को शब्द दो" और "सन्नाटा" छोडकर शेष सभी कविताएँ ।
* गजानन माधव मुक्तिबोध – "मुझे पुकारती हुई पुकार" को छोडकर शेष सभी कविताएँ ।
* गिरिजा कुमार माथुर – "ढाकवणी" और शब्द का जन्म छोडकर शेष सभी कविताएँ ।
* सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – " यही कही एक कच्ची सडक थी " को छोडकर शेष सभी कविताएँ ।

५. संसद से सडक तक – धूमिल
[अध्ययन के लिए निम्नलिखित १५ कविताएँ.

–/ २ /–

निर्धारित है – जनतंत्र के सूर्योदय में अकालदर्शन, वसंत, मोचीराम, शहर में सूर्यास्त, प्रौढ़शिक्षा, मकान, एक आदमी, शहर का व्याकरण, शहर, श्याम और एक बूढ़ा मैं, सच्ची बात, हमारी संभावनाओं के नीचे, मुनासिब कार्रवाही, भाषा की रात और पटकथा ।]

संदर्भ ग्रंथ :-

१. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
२. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – डॉ. नगेंद्र
३. कामायनी कला और दर्शन – डॉ. रामसूर्ति त्रिपाठी
४. मैथिलीशरण गुप्त और उनका साहित्य – डॉ. दानबहादुर पाठक
५. मैथिली शरण गुप्त – सं. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित
६. आधुनिक हिंदी काव्य – डॉ. भगीरथ मिश्र
७. उर्वशी : संवेदना और शिल्प – डॉ. सीताराम शर्मा
८. आधुनिकता के हाशिये में उर्वशी – जयसिंह निरु
९. दिनकर और उनकी काव्य – कृतियाँ – पं. शिवचंद्र शर्मा
१०. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्यकला – डॉ. शेखर जैन
११. नई कविता स्वरुप और समस्या – डॉ. जगदीश गुप्त
१२. नई कविता सीमाएँ और संभावनाएँ – गिरीजाकुमार माथुर
१३. छायावादोत्तर हिंदी कविता – प्रमुख प्रवृत्तियाँ – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
१४. नई कविता के नाट्य काव्य – डॉ. हरिचरण शर्मा
१५. नई कविता की नाट्यभूमि – डॉ. हुकुमचंद राजपाल
१६. नरेंद्र शर्मा का काव्य – दुर्गाशंकर मिश्र
१७. अज्ञेय की कविता – एक मूल्यांकन – डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
१८. कवि अज्ञेय – विश्लेषण एवं मूल्यांकन – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा
१९. धूमिल और उसका काव्यसंघर्ष – डॉ. ब्रह्मदेव मिश्र

प्रश्नपत्र ६ : विशेष स्तर–भाषाविज्ञान, समाज भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा.

उद्देश्य :-

१. भाषाविज्ञान की नवतम शाखाध्ययन के साथ साथ हिंदी भाषा के गठन और व्यवहार को समझना ।
२. इस दृष्टि से प्रथम सत्र के विषय का अध्ययन प्रधानतः समाजभाषा विज्ञान के संदर्भ में कराना ।
३. प्रथम सत्र में प्राप्त भाषाविज्ञान के सैध्दांतिक ज्ञान की पृष्ठभूमि में द्वितीय सत्र में हिंदी भाषा के विकास का अध्ययन करना ।

प्रश्नपत्र ६ : भाषाविज्ञान, समाजभाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा

प्रथम सत्र

१. भाषाविज्ञान का परंपरागत एवं आधुनिक स्वरुप भाषाविज्ञान की उपशाखाएँ – कोशविज्ञान, व्युत्पत्तिविज्ञान, लिपीविज्ञान, भाषाभूगोल का संक्षिप्त परिचय.
२. स्वन एवं स्वनिम विज्ञान – स्वन का स्वरुप, स्वन का उत्पादन, संवहन और ग्रहण, वाग्अवयव और उच्चारण प्रक्रिया, स्वनों का वर्गीकरण, स्वर और व्यंजन, स्वरों का वर्गीकरण, व्यंजनों का वर्गीकरण, स्वनिम का स्वरुप, स्वनिम का निर्धारण, स्वनिम के भेद, ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन.

३. रूप एवं रूपिम विज्ञान – रूप [पद] की परिभाषा, संबंध तत्व और उसके भेद, धातु, प्रतिपदिक और पद, रूपिम का स्वरूप, रूपिम के भेद, रूप स्वनिम विज्ञान.

४. समाज भाषाविज्ञान का स्वरूप, समाज भाषाविज्ञान का क्षेत्र, सस्यूर ब्लूमफील्ड चॉम्स्की और सपीर और भारतीय विद्वानों की समाज भाषा वैज्ञानिक मान्यताएँ.

५. परिवेश और भाषिक व्यवहार, लघुक्षेत्र, द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, लोकव्यवहार, प्रशासन, पत्रकारिता, शिक्षा का माध्यम, संचार माध्यमों की भाषा.

६. भाषा, समाज और संस्कृति, भाषावार प्रांतरचना, भाषिक एकात्मता और राष्ट्रभाषा.

द्वितीय सत्र

१. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ – आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का स्त्रोत एवं विकास हिंदी भाषा पर पूर्ववर्ती भाषाओं का प्रभाव संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के संदर्भ में.

२. हिंदी की बोलियाँ – वर्गीकरण तथा सामान्य परिचय खड़ीबोली, ब्रजभाषा, अवधी और दाक्खिनी हिंदी का ध्वन्यात्मक और पदात्मक संक्षिप्त परिचय.

३. हिंदी शब्द निर्माण – उपसर्ग, प्रत्यय, समास.

४. हिंदी भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया तथा अव्यय का विकासात्मक अध्ययन.

५. हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना – स्वर, व्यंजन, संयुक्त स्वर, शब्द भेद वाक्य रचना, बलाघात, अनुनासिकता.

६. देवनागरी लिपि – विशेषताएँ, विकास, सुधार के प्रयत्न, देवनागरी लिपि का मानक रूप.

७. भारतीय संविधान की धारा ३५१ में निर्दिष्ट भारत की सामासिक एकता की अभिव्यक्ति के रूप में हिंदी भाषा.

संदर्भ ग्रंथ :-

१. आधुनिक भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी.
२. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव त्रिवेदी.
३. आधुनिक भाषाविज्ञान – डॉ. कृपाशंकर सिंह, चतुर्भुज सहाय. नॅशनल पब्लि. हाऊस, नईदिल्ली.
४. भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा का विकास – डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय
५. भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा – डॉ. सुधाकर कलवडे. [साहित्य रत्नाकर, कानपूर].

६. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – डॉ. उदयनारायण तिवारी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद.

७. हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी [किताब महल, इलाहाबाद].

८. हिंदी उद्भव, विकास और रूप – डॉ. हरदेव बाहरी [किताब महल, इलाहाबाद].

९. हिंदी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी. [किताब महल, इलाहाबाद].

१०. नागरी लिपिका उद्भव और विकास – डॉ. ओमप्रकाश भाटिया.

११. नागरी लिपि : रूप और सुधार – मोहन ब्रिज.

१२. Sociolinguistics – A. R. Hudson.

१३. Sociolinguistics – S. B. Pride and Sened Holmes.

१४. Language, Education, Social Justice – Dr. Laxman-Khubchandani

१५. हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका – भोलानाथ तिवारी.

१६. हिंदी का सामाजिक संदर्भ – डॉ. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव [के. नि. आगरा].

१७. भाषा और समाज – डॉ. रामविलास शर्मा.

१८. हिंदी भाषा संदर्भ और संरचना – प्रा. सूरजभान सिंह [साहित्य सहकार दिल्ली].

१९. मानक हिंदी का स्वरूप – डॉ. भोलानाथ तिवारी [प्रभात प्रकाशन].

२०. समाजभाषाविज्ञान – संपादक – डॉ. ए. व. शहा.

<u>प्रश्नपत्र ७ : विशेष स्तर – हिंदी साहित्य का इतिहास [रीतिकाल की समाप्ति तक]</u>

<u>उद्देश्य :-</u>

आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल

युगीन परिस्थितीयों के संदर्भ में सा. इ. के. काल विभाजन की जानकारी देना।
युगीन परिस्थितीयों और साहित्यिक प्रमुख प्रवृत्तियों के संदर्भ में कालों के नामकरण की जानकारी देना।

आदिकालीन, भक्तिकालीन और रीतिकालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों की जानकारी तथा प्रमुख प्रतिनिधी कवियों और उनकी रचनाओं का साहित्यिक परिचय देना।

जैन, सिध्द, नाथ साहित्य और अपभ्रंश साहित्य के हिंदी साहित्य पर हुए प्रभाव की जानकारी देना। प्रमुख कवियों और रचनाओं की जानकारी देना।

<u>आधुनिक काल :</u>

गद्य के आविर्भाव के लिए कारण बनी परिस्थितियों की जानकारी देना।
आधुनिक काल की साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में प्रत्येक उपखंड में निर्मित साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों और

उनके प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं की जानकारी देना।

पद्य के विकास के प्रमुख चरणों की परिस्थितियों के संदर्भ में जानकारी देना तथा पद्य की प्रवृत्तियो, वादो, प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं की जानकारी देना।

विविध गद्य विधाओं के क्रमिक विकास की जानकारी देना। आधुनिक काल के गद्य की विशिष्ट प्रवृत्ति की, पत्रकारिता के इतिहास की और उसके साहित्यिक प्रदेय की जानकारी देना।

प्रथम सत्र

आदिकाल –

* हिंदी साहित्य का काल विभाजन विभाजन के आधार – भाषा साहित्य, प्रथम साहित्यकार, भाषाक्षेत्र।
* आदिकाल के प्रारंभ के संबंध में विविध आचार्यो की मान्यताएँ और उनके संबंध मे तर्क।
* आदिकाल के विविध नाम – चारणकाल, सिध्दसामंतकाल, वीरगाथाकाल और नामकरण के आधार।
* आदिकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और साहित्यक परिस्थितियाँ और उनका साहित्य पर प्रभाव।
* रासो साहित्य परंपरा – "रासो" शब्द के अर्थ, रासो के प्रकार, प्रकारभेदों के आधार, रासो साहित्य की प्रवृत्तियाँ, जैन रासो, धार्मिक रासो और वीर रासो।
* पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता और प्रामाणिकता के आधार के संबंध में विभिन्न विद्वानों की मान्यताएँ, पृथ्वीराज रासो का काव्यवैभव, साहित्यिक परिचय।
* अपभ्रंश साहित्य और हिंदी साहित्य – परस्पर संबंध, अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और उनका हिंदी साहित्य पर प्रभाव।
* सिध्दों और नाथों के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – सिध्दनाथ साहित्य सृजन के कारण, सिध्द-नाथ साहित्य का परवर्ती साहित्य पर, खासकर निर्गुण भक्ति साहित्य पर प्रभाव।
* गोरखनाथ का साहित्यिक परिचय।
* नाथपंथी साहित्य की विषय और शैलीगत प्रवृत्तियाँ, परवर्ती साहित्य पर नाथपंथीय साहित्य का प्रभाव।
* वीरगाथा साहित्य की विषय और शैलीगत प्रवृत्तियाँ, सामाजिक परिस्थितीयों के संदर्भ मे प्रमुख प्रवृत्तियों का मूल्यांकन।
* विद्यापति का साहित्यिक परिचय और परवर्ती साहित्य पर प्रभाव।
* चंदबरदाई और खुसरो का साहित्यिक परिचय।

भक्तिकाल :-

१. भक्तिकालीन साहित्य को प्रभावित करनेवाला पूर्ववर्ती साहित्य, विविध सांप्रदायिक मान्यताएँ – संतमत, वैष्णव भक्ति, भागवत भक्ति, विशिष्टाद्वैत, अद्वैत, शुध्दाद्वैत, द्वैत, गौडीय मत का प्रभाव। नाथ और सिध्द साहित्य का प्रभाव। नारदीय भक्ति सूत्र, उज्ज्वलनील मणि, पांचरात्रि संहिता, भागवत का भक्ति के विकास में योगदान।

२. भक्तिकालीन साहित्य सामायिकपरिस्थितियों की उपज है – के पक्ष– विपक्ष में मत–मतों के आधार।

३. भक्तिकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ।

४. निर्गुण भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ – निर्गुण भक्ति मार्ग के दो भेद प्रेम मार्ग और ज्ञान मार्ग – दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

५. प्रेम मार्ग के प्रतिनिधि कवि जायसी का साहित्यिक परिचय।

६. ज्ञानमार्ग के प्रतिनिधि कवि कबीर का साहित्यिक परिचय।

७. सगुण भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – सगुण भक्तिमार्ग के दो भेद– राम भक्ति साहित्य और कृष्णभक्ति साहित्य।

८. रामभक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास का साहित्यिक परिचय।

९. कृष्णभक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि, अष्टछाप, मीरा का साहित्यिक परिचय।

१०. नीति साहित्य का परिचय – रहीम का साहित्यिक परिचय।

११. भक्ति के विकास में योगदान देनेवाले संप्रदायों का स्थूल परिचय हितहरिवंशी, राधावल्लभ, वल्लभ, गौडीय [चैतन्य], निंबार्क, माध्व, रामभक्ति में रसिक संप्रदा सांप्रदायिक मान्यताएँ और आनुषंगिक साहित्य सृजन का स्थूल परिचय।

१२. कृष्णभक्ति और रामभक्ति साहित्य की प्रवृत्तियों, शैलियों और परवर्ती प्रभावों के संदर्भ में परस्पर तुलना।

१३. भक्तिकालीन साहित्य की साहित्य के इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से मान्यता विविध कारण।

१४. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक उपायदेयता– जायसी, तुलसीदास और कबीर के साहित्य के संदर्भ में।

१५. भक्तिकालीन साहित्य का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव।

रीतिकाल :-

* सामयिक, सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक और साहित्यिक परिस्थितियाँ।
* रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार।
* रीतिकालीन साहित्य की विषय और शैली की दृष्टि से प्रवृत्तियाँ।
* लक्षण और लक्ष्य ग्रंथों का निर्माण।
* रीतिकालीन साहित्य परिस्थितियों की उपज है – के पक्ष–विपक्ष में विविध मत और उनके आधार।

* रीतिकाल में शृंगारेतर साहित्य – भक्ति, नीति, वीर रीति।
* रीतिबध्द और रीतिमुक्त का अभिप्राय।
* रीतिबध्द और रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।
* आचार्यत्व और कवित्व की परंपरा।
* प्रवर्तक आचार्य कौन और क्या – केशवदास या चिंतामणी – विविध मान्यताएँ और उनके आधार।
* रीतिकालीन साहित्य संस्कृत साहित्यशास्त्र का उत्था गाम है – पक्ष-विपक्ष में विविध मतों का आधार विवेचन।
* रीतिकालीन साहित्य और समाज का परस्पर संबंध।
* रीतिकालीन साहित्य का ऐतिहासिक महत्व – राजाओं की जीवनीयों का परिचय।
* रीतिकालीन साहित्य में नारी चित्रण और नारी का स्थान।
रीतिकालीन साहित्य के पुन: अवलोकन की आवश्यकता – मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक।
* हिंदी के साहित्यिकों का परिचय – केशवदास, देव, चिंतामणी, भिखारीदास कुलपति मिश्र, बिहारी, घनानंद, भूषण, सेनापति, मतिराम पद्माकर।
* सतसई परंपरा का परिचय।

हिंदी साहित्य का इतिहास [आधुनिक काल]
द्वितीय सत्र के लिए.

आधुनिक काल :

गद्य

भारतेंदु युग – विविध गद्य विधाओं का विकास, कारणीभूत परिस्थितियाँ और पूर्ववर्ती साहित्य का प्रभाव-प्रभाव ग्रहण कितना, सुधारित प्रभाव कितना, अस्वीकार कितना, भा. पूर्ववर्ती गद्य का स्वरूप और विशेषताएँ, प्रमुख गद्यकार, फोर्ट विल्यम कॉलेज, ईसाई मिशनरी, आर्य समाज, ब्रम्हो समाज आदि का प्रभाव मैथिली। राजस्थानी। ब्रजसाहित्य भारतेंदु के गद्य साहित्य का परिचय। भारतेंदु मंडल के साहित्य की विशेषताएँ – पत्रकारिता से उत्पन्न साहित्य विधाएँ – स्वरूप, विशेषताए, प्रयोजन। अंबिकादत्त व्यास, प्रेमघन, राधाकृष्ण, प्रतापनारायण मिश्र का साहित्यिक परिचय। साहित्य विषयक मान्यताओं में परिवर्तन।

द्विवेदी युग – महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान-द्विवेदी मंडल के गद्यकारों का योगदान साहित्य विषयक मान्यता, राष्ट्रीयता, सुधार, नीति, भाषा-सुधार। काँग्रेस का बिगुल। निबंध, उपन्यास, नाटक, कहानी, आलोचन साहित्य का विकास। प्रमुख गद्यकार – राधाचरण गोस्वामी, वृंदावनलाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, देवकीनंदन खत्री, गोपाल राम गहमरी, किशोरीलाल गोस्वामी, प्रेमचंद, बालमुकुंद गुप्त, रामचंद्र शुक्ल, श्यामसुंदरदास, मिश्रबंधु। ज्ञान साहित्य का विकास, नवीन गद्यविधाओं का सूत्रपात और विकास। सरस्वती और नागरी प्रचारिणी पत्रिका का योगदान।

द्विवेदी युग के बाद :-

* विभिन्न गद्य विधाओं का विकास – प्रेरक परिस्थितियाँ – नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, यात्रावृत्त आत्मकथा। प्रमुख गद्यकार – प्रसाद, प्रेमी, ल. ना. मिश्र, भुवनेश्वर प्रसाद रामकुमार वर्मा, भट्ट, अश्क,

... 8

जगदीशचंद्र माथुर, ... विष्णु प्रभाकर, ल. ना. लाल, राकेश, प्रेमचंद, कौशिक, जैनेंद्र, यशपाल, सुदर्शन उग्र, अज्ञेय, गुलाबराय, आ. शुक्ल, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, दिनकर, विद्यानिवास परसाई, वाजपेयी, नगेंद्र, भगवतीचरण वर्मा, नागर, हजारीप्रसाद रेणु, इलाचंद्र जोशी, ~~यादव~~ यादव। प्रमुख लेखिकाएँ – महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, शिवानी, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, सुनीता जैन उषा प्रियंवदा, किर्ती चौधरी। ज्ञान साहित्य का विकास। साहित्य को प्रभावित करनेवाले साहित्येतर विविध प्रभाव।

* काव्य– भारतेंदु युग : पूर्ववर्ती काव्य–भारतेंदु युग से परिवर्तन, परिस्थितियों का प्रभाव काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–भारतेंदु काव्य की ओर मंडल के अन्य कवि।
* द्विवेदी युग : खड़ी बोली में काव्य – विकास में कठिनाइयाँ–द्विवेदीजी का योगदान। मैथिलीशरण, हरिऔध का साहित्यिक परिचय – द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
* राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा, माखनलाल, नवीन, सुभद्राकुमारी।
* छायावाद–बृहद् त्रयी, लघुत्रयी – प्रमुख प्रवृत्तियाँ – निर्माण और लोप के कारण।
* रहस्यवाद – महादेवी, जयशंकर, निराला, पंत– का परिचय तथा रहस्यवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
* हालावाद, प्रमुख विशेषताएँ।
* प्रगतिवाद–निर्मिति के कारण, भौतिकतावाद का बढता प्रभाव। ज्ञान साहित्य की विस्तृत कक्षाएँ, औद्योगीकरण, गांधीवादी और मार्क्सवादी प्रभाव, जीवन–दर्शन में परिवर्तन–काव्य की प्रमुख विशेषताएँ – प्रमुख कवि – अंचल, दिनकर, निराला, पंत, वर्मा, भवानीप्रसाद मिश्र, नरेंद्र शर्मा। युध्द–शांति के संदर्भ में राजनीतिक परिस्थितियाँ।
* प्रयोगवाद–निर्मिति के कारण – प्रमुख प्रवृत्तियाँ–प्रमुख कवि – अज्ञेय, रामविलास, हरिनारायण, भवानीप्रसाद, गिरिजाकुमार – कवि – आलोचक की "आचार्यत्व कवित्व" की प्रवृत्ति का पुनरुत्थान। प्रयोगवाद और नई कविता में अंतर। साठोत्तरी काव्य प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि। प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त परिचय।
* पत्रकारिता का विकास – और उसका साहित्य में योगदान।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास – रामबहोरी शुक्ल, भगीरथ मिश्र

२. आदिकालीन हिंदी साहित्य – डॉ. हरीश

३. आदिकाल का हिंदी गद्य साहित्य – डॉ. हरीश

४. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

५. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. दयानंद श्रीवास्तव

६. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

७. हिंदी साहित्य : एक परिचय – डॉ. त्रिभुवनसिंह

८. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र.

९. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, चमुर्थ भाग [निर्गुण भक्ति] – सं. पं. परशुराम चतुर्वेदी.
१०. हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – राजनाथ शर्मा
११. हिंदी साहित्यानुशीलन – सत्यकाम वर्मा
१२. हिंदी साहित्य का आदिकाल – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी.
१३. आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास – डॉ. श्रीकृष्णलाल
१४. हिंदी साहित्य की नवीन विधाएँ – डॉ. कैलासचंद्र भाटिया
१५. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य – डॉ. महेंद्र भटनागर
१६. हिंदी गद्य साहित्य का विकासक्रम – आचार्य उमेश शास्त्री
१७. हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी.
१८. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

प्रश्नपत्र ८ [क] : विशेष स्तर – वैकल्पिक
हिंदी आलोचना : विकास और प्रमुख आचार्य

उद्देश्य :-

छात्रों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना –

१. आलोचना के स्वरूप का ज्ञान।
२. हिंदी आलोचना की प्रकृति का ज्ञान।
३. हिंदी आलोचना के विकासक्रम का परिचय।
४. हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पध्दति एवं आलोचना की तरतमत का बोध।
५. निर्धारित आलोचकों की आलोचना पध्दतियों के द्वारा छात्रों आलोचना दृष्टि का बीजवपन।

* पाठयक्रम में निर्धारित आलोचक–

[१] आ. रामचंद्र शुक्ल
[२] डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
[३] डॉ. नंददुलारे वाजपेयी
[४] डॉ. नगेंद्र
[५] डॉ. रामविलास शर्मा।

प्रथम सत्र

निम्नलिखित विषयों का ज्ञान आवश्यक है–

१] आलोचना का स्वरूप एवं उद्देश्य
२] आलोचना का इतिहास
३] आलोचना की प्रक्रिया
४] आलोचना और अनुसंधान
५] आलोचना के प्रमुख प्रकार

६] आलोचना के महत्त्वपूर्ण गुण
७] हिंदी आलोचना का विकासक्रम
८] हिंदी आलोचना और सृजनशील साहित्य।

निर्धारित आलोचकों में से आ. रामचंद्र शुक्ल और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पध्दतियों का अध्ययन। आ. रामचंद्र शुक्ल और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पध्दतियों में साम्य एवं वैषम्य। आधुनिक हिंदी आलोचना में आ. रामचंद्र शुक्ल का स्थान।

डॉ. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेंद्र तथा डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पध्दतियों का अध्ययन– डॉ. नंददुलारे वाजपेयी की समन्वयशील आलोचना, डॉ. नगेंद्र की आलोचना, डॉ. रामविलास शर्मा और मार्क्सवादी आलोचना।

हिंदी आलोचना साहित्य को उपरोक्त तीनों आलोचकों का योगदान। इन आचार्यों की आलोचना पध्दतियों का तुलनात्मक अध्ययन। आवश्यकतानुसार पांचो आचार्यों की प्रमुख रचनाओं का स्थूल ज्ञान अपेक्षित है।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. हिंदी आलोचना – स्वरूप एवं प्रक्रिया – सं. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित
२. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिध्दान्त – डॉ. रामलाल सिंह
३. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – डॉ. रामविलास शर्मा
४. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और साहित्य – डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त
५. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी : व्यक्ति और साहित्य – डॉ. रामाधार शर्मा
६. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ – डॉ. रामेश्वरलाल खंडेलवाल
७. हिंदी आलोचना का इतिहास – रामदरश मिश्र
८. हिंदी आलोचना उद्भव और विकास – भगवत स्वरूप मिश्र
९. हिंदी के विशिष्ट आलोचक – नंददुलार राय
१०. हिंदी की सैध्दांतिक समीक्षा –डॉ. रामाधार शर्मा
११. हिंदी की सैध्दांतिक आलोचना – डॉ. रामकिशोर मिश्र
१२. हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. रामदरश मिश्र
१३. हिंदी आलोचना की परंपरा और आ. रामचंद्र शुक्ल – डॉ. शिवकुमार मिश्र
१४. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी –सं. डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१५. डॉ. नगेंद्र के आलोचना सिध्दान्त – नारायणप्रसाद चौबे
१६. डॉ. नगेंद्र अभिनंदन ग्रंथ
१७. डॉ. रामविलास शर्मा – डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१८. आलोचक रामविलास शर्मा – डॉ. नत्थन सिंह
१९. दूसरी परंपरा की खोज – डॉ. नामवरसिंह
२०. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी।

प्रश्नपत्र ८ [ख] : विशेष स्तर – वैकल्पिक
शैलीविज्ञान

उद्देश्य :

विद्यार्थियों की निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना –

१. शैलीविज्ञान की परिभाषा, स्वरूप, व्याप्ति और आवश्यकता – साहित्य के संदर्भ में।
२. शैलीविज्ञान का उद्गम और क्रमिक विकास।
३. शैली के उपकरणों। शैलीविज्ञान का अन्य विज्ञानों के साथ संबंध।
४. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र और शैलीविज्ञान का संबंध।
५. शैलीविज्ञान में विहीत अध्ययन – प्रणालियाँ।
६. हिंदी साहित्य के मध्ययुगीन और आधुनिक गद्य-पद्य शैलीकारों की शैलियों का परिचय।

–: प्रथम सत्र :–

१. शैलीविज्ञान का स्वरूप, परिभाषाएँ, प्रयोजन तथा अध्ययन क्षेत्र।
२. शैलीविज्ञान का उद्गम और विकास, शैली–विज्ञान या कला, शैली और चयन की समस्या, शैली बनाम रीति। शैलीविज्ञान और आलोचना।
३. शैली के उपकरण – चयन, विचयन, स्थापन, अग्र, प्रस्तुतीकरण, पुनरावर्तन सादृश्यविधान, समांतरता, प्रतीक विधान, बिंब विधान।
४. शैलीविज्ञान तथा अन्य विज्ञान – भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र दर्शन, समाजशास्त्र।
५. साहित्य समीक्षा प्रणालियों में शैलीविज्ञान का स्थान। शैलीविज्ञान की स्वतंत्र सत्ता।
६. शैलीविज्ञान का इतिहास।

–: द्वितीय सत्र :–

७. भारतीय काव्यशास्त्र तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांतों में शैलीविज्ञान के तत्व।
८. काव्यभाषा तथा काव्येतर भाषा।
९. गद्यसाहित्य और पद्यसाहित्य की समीक्षण के लिए शैलीविज्ञान का अनुप्रयोग।
१०. शैलीविज्ञान की अध्ययन प्रक्रिया – उसमें भाषाशास्त्र के अंगों का उपयोग।
११. ध्वनीय शैलीविज्ञान।
१२. विशिष्ट साहित्यकारों की कुछ रचनाओं का शैली वैज्ञानिक अध्ययन – कबीर, बिहारी, प्रेमचंद, जैनेंद्रकुमार, कवि निराला, कवि सुक्तिबोध।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. शैलीविज्ञान का स्वरूप – गुप्तेश्वरनाथ उपाध्याय
२. शैलीविज्ञान की रूपरेखा – कृष्णकुमार शर्मा
३. शैलीविज्ञान – भोलानाथ तिवारी
४. रीतिविज्ञान – विद्यानिवास मिश्र
५. व्यावहारिक शैलीविज्ञान – भोलानाथ तिवारी ।
६. शैलीविज्ञान – डॉ. नगेंद्र
७. शैलीविज्ञान – सुरेशकुमार
८. शैलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
९. गद्यरचना – शैली वैज्ञानिक विवेचन – कृष्णकुमार शर्मा
१०. शैलीविज्ञान का इतिहास – कृष्णकुमार शर्मा
११. भारतीय शैलीविज्ञान – डॉ. सत्यदेव चौधरी
१२. आधुनिक आलोचना बनाम शैलीविज्ञान – कृष्णशंकर सिंह
१३. शैली और शैलीविज्ञान – सं. डॉ. सुरेशकुमार और रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
१४. शैलीविज्ञान का इतिहास – पांडेय शशिभूषण "शीतांशु"
१५. व्यावहारिक शैलीविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी ।

प्रश्नपत्र ८ [ग] : विशेष स्तर – वैकल्पिक
अनुवादविज्ञान

उद्देश्य :-

विद्यार्थीओं को निम्नलिखित विषयोंकी जानकारी देना–

१. अनुवाद – परिभाषा, स्वरूप, महत्व और व्याप्ति की जानकारी देना ।
२. अनुवाद के विविध रूप और उनकी प्रक्रियाएँ ।
३. अनुवाद का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष – प्रादेशिक और भाषिक संदर्भ में ।
४. अनुवाद करते समय उभरनेवाली विविध समस्याएँ और उनके समाधान भाषिक, विधा और प्रक्रिया के संदर्भ में ।
५. अनुवाद का भाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान के साथ संबंध ।
६. अनुवाद का मूल्यांकन विधा, आवश्यकता और मूल्यांकन की प्रक्रीया के संदर्भ में ।
७. हिंदी में अनुवाद कार्य के क्रमिक विकास का परिचय ।

प्रथम सत्र

१. अनुवाद की आवश्यकता, उद्देश्य
२. अनुवाद – परिभाषाएँ तथा स्वरूप विश्लेषण
३. अनुवाद – कला तथा विज्ञान
४. अनुवाद का मौखिक एवं लिखित स्वरूप, महत्व एवं वर्तमान काल में उसकी प्रायोगिकता ।
५. अनुवाद की प्रक्रिया – मूल भाषा के पाठबोधन [और व्याख्या] लक्ष्य भाषा में विशेषताएँ, अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, अधिकानुवाद, न्यूनानुवाद आदि ।

६. अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष – समाज विशेष एवं संस्कृति विशेष के संदर्भ में उपस्थित सामग्री में क्षेत्रीय और देशीय संदर्भ एवं अंतर।
७. अनुवाद कार्य में सहायक साधनों के उपयोग का महत्त्व।
सावधानी एवं अभ्यास–द्विभाषिक, त्रिभाषिक कोश, वर्णनात्मक कोश, सूचीयाँ, विषय विशेष के ग्रंथ संयंत्र।

द्वितीय सत्र

८. अनुवाद के प्रकार – साहित्यिक विधा के आधार पर, प्रक्रिया के आधार पर तथा गद्य–पद्य के आधार पर।
९. रचनात्मक साहित्य के अनुवाद का स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ एवं सीमाएँ।
१०. वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री के अनुवाद की आवश्यकता स्वरूप, विशेषताएँ एवं समस्याएँ।
११. अनुवाद और भाषाविज्ञान–

१] भाषाविज्ञान के अंश और अनुवाद।
२] अनुवाद और ध्वनिविज्ञान।
३] अनुवाद और अनुलेखन।
४] अनुवाद और अर्थविज्ञान।
५] अनुवाद और रूपविज्ञान।
६] अनुवाद और शब्दविज्ञान।

१२. अनुवाद कार्य में शैलीविचार – अनुवाद की शैली का स्वरूप एवं विशेषता–सामग्री–विविध शैलियों का निर्वाह अथवा परिवर्तन की संभावनाएँ– प्रतिबद्धता एवं स्वतंत्रता प्रश्न।
१३. अनुवाद की समस्याएँ – मुहावरे, कहावतों के अनुवाद, अलंकारों के अनुवाद, काव्यानुवाद, नाट्य का अनुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, सांस्कृतिक समस्या, शीर्षक की समस्या आदि।
१४. अनुवाद के मूल्यांकन का प्रश्न – आवश्यकता तथा निकष।
१५. अनुवाद की योग्यता, कर्तव्य एवम् आचार संहिता, सफल अनुवादक की कसौटियाँ।
१६. हिंदी साहित्य में अनुवाद कार्य की परंपरा का इतिहास।

प्रकल्प–

कविता, कहानी, अनुवाद, उत्कृष्ट परिच्छेदों के अनुवाद, विविध विषयों की चुनी हुई सामग्री का अनुवाद।

संदर्भ ग्रंथ :

१. अनुवादविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
२. अनुवाद कला : कुछ विचार – आनंद प्रकाश खेमानी
३. अनुवाद कला – वासुदेव शास्त्री
४. अनुवाद : सिध्दान्त और व्यवहार–एस. के. शर्मा
५. विशेषीकृत भाषा और अनुवाद – गोपाल शर्मा

६. विकासशील देशों में अनुवाद की समस्याएँ – बालकृष्ण केसकर
७. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी
८. काव्यानुवाद की समस्याएँ – महेंद्र चतुर्वेदी, डॉ. ओमप्रकाश गागा
९. अनुवादकला और समस्याएँ – [वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक ग्रंथालय]।
१०. अनुवादविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति/सम्पा : डॉ. सु. ब. शहा, डॉ. पीतांबर सरोदे

प्रश्नपत्र ८ [घ] : विशेष स्तर – वैकल्पिक
सौंदर्यशास्त्र : भारतीय एवं पाश्चात्य

उद्देश्य :-

विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना [व्यक्ति और वस्तुनिष्ठ]

१. सौंदर्यशास्त्र का भारतीय और पाश्चात्य स्वरूप।
२. सौंदर्यशास्त्र का अन्य विद्याशाखाओं से संबंध।
३. सौंदर्यशास्त्र की व्याप्ति – विविध कलाओं के साथ संबंध।
४. सौंदर्य के उपादान – तथा [विशेष संदर्भ साहित्य] सौंदर्यानुभूति और आनंदानुभूति का स्वरूप।
५. भारतीय और पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र विषयक चिंतन धाराओं का क्रमिक विकास
६. हिंदी में सौंदर्यशास्त्र विषयक विचार।

-: प्रथम सत्र :-

१. सौंदर्यशास्त्र : स्वरूप एवं व्याप्ति। भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण। सौंदर्यशास्त्र का अन्य विद्याशाखाओं से संबंध – दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, जीवविज्ञान समाजशास्त्र, कलाविज्ञान, साहित्य एवं काव्यशास्त्र। सौंदर्यशास्त्र विषयक चिंतन के ऐतिहासिक विकास का विहंगावलोकन।

२. सौंदर्य की परिभाषा एवं स्वरूप – व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ संदर्भ में सौंदर्य के अभिव्यंजक पर्यायवाची शब्द तथा उनका औचित्य।

३. सौंदर्य और कला का अंत:संबंध। कलाओं का वर्गीकरण और सौंदर्यदृष्टि। सत्यम्–शिवम्/सुंदरम् विषयक संकल्पना। सौंदर्य के उपादान – कल्पना, बिंब, प्रतीक आदि। सुंदर और उदात्त। सौंदर्य की कलावादी दृष्टि।

४. सौंदर्यानुभूति–सौंदर्यबोध तथा रसानुभूति। विशिष्ट पुन:प्रत्यय और सौंदर्यबोध। अनुभूति का प्रत्यक्षीकरण और सौंदर्यबोध। रूप तथा भाषा और सौंदर्यबोध। सौंदर्यानुभूति और आनंदानुभूति। कविता तथा अन्य साहित्यविधाओं के सौंदर्य शास्त्राधारित अनुशीलन की आवश्यकता।

५. भारतीय साहित्य में सौंदर्यशास्त्र विषयक विचारसूत्र और उसके प्रमुख विचारों का दृष्टिकोण –

अ] वैदिक साहित्य

आ] रामायण, महाभारत
इ] मध्ययुगीन संस्कृत काव्य
उ] भक्तिसाहित्य
ए] हिंदी में सौंदर्यशास्त्रविषयक चिंतन [ग्रंथ एवं लेखों के आधार पर]।

द्वितीय सत्र.

६. भारतीय काव्यशास्त्र का सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष– निम्नलिखित आचार्यों के मतव्यों के आधार पर –

१] भरत
२] भामह
३] दंडी
४] वामन
५] आनंदवर्धन
६] अभिनव गुप्त
७] पंडितराज जगन्नाथ
८] क्षेमेंद्र।

७. पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का विकास और पाश्चात्य विचारक–

अ] प्रारंभिक काल
आ] नव्या प्लेटोवाद
इ] सौंदर्यशास्त्र की बुध्दिवादी धारा
उ] आंग्ल अनुभववादी सौंदर्यशास्त्र
ए] जर्मन प्रत्ययवाद और सौंदर्यशास्त्रीय संयोजन
ऐ] बीसवीं शती के सौंदर्यशास्त्रविषयक प्रमुख वाद।

८. पश्चिमी विद्वानों का सौंदर्यशास्त्रविषयक दृष्टिकोण–

१] हीगेल
२] क्रोचे
३] काण्ट
४] लोंजाइनस
५] कोलरिज
६] मार्क्स
७] टॉलस्टाय
८] सुजन लैंगर।

९. हिंदी की कुछ साहित्य कृतियों का सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से आस्वादन–

अ] सूरसागर का कुछ अंश।
आ] रामचरितमानस का कुछ अंश।
इ] बिहारी के कुछ दोहे।
ई] राम की शक्तिपूजा।
उ] कामायनी का कुछ अंश।
ऊ] अज्ञेय की कुछ कविताएँ।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. सौंदर्यशास्त्र के तत्व – डॉ. कुमार विमल
२. कला विवेचन – डॉ. कुमार विमल
३. सौंदर्य तत्व – डॉ. सुरेंद्रनाथदास गुप्त [अनु. डॉ. आनंदप्रसाद दीक्षित]
४. रससिध्दान्त और सौंदर्यशास्त्र – डॉ. निर्मला जैन.
५. कलाशास्त्र और मध्यकालीन भारतीय क्रांतियाँ – डॉ. रमेशकुंतल मेघ
६. कालिदास की लालित्य योजना – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

७. सौंदर्यशास्त्र – श्री. रामाश्रय शुक्ल "करुणेन्दु"
८. मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र – संपा. कमला प्रसाद, मैनेजर पांडेय, ज्ञानरंजन
९. भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. फतेहसिंह
१०. भारतीय सौंदर्यशास्त्र का तात्त्विक विवेचन एवं ललित कलाएँ– डॉ. रामलखन शुक्ल
११. भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेंद्र
१२. अथातो सौंदर्य जिज्ञासा – डॉ. रमेशकुंतल मेघ
१३. काव्य में सौंदर्य और उदात्त तत्व – श्री. शिवबालक राय
१४. सौंदर्य तत्व निरूपण -- एस. टी. नरसिंहाचारी
१५. सौंदर्यतत्व और काव्यसिद्धान्त – डॉ. सुरेंद्र बारलिंगे [अनु. डॉ. मनोहर काळे] ।

मराठी ग्रंथ :

१६. सौंदर्यशास्त्र – डॉ. रा. भा. पाटणकर
१७. सौंदर्यानुभव – श्री. प्रभाकर पाध्ये
१८. सौंदर्य आणि साहित्य -- श्री. बा. सी. मर्ढेकर.

प्रश्नपत्र ८ [च] : विशेष स्तर – वैकल्पिक
प्रयोजनमूलक हिंदी.

उद्देश्य :-

विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना–
१. हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय।
२. देवनागरी लिपि का स्वरूप और विशेषताएँ तथा आधुनिक तकनीकों की दृष्टि से उसकी उपयुक्तता। भारतीय अंकों का स्वरूप और अंतर्राष्ट्रीय रूप।
३. हिंदी शब्द वर्तनी का स्वरूप, संभव अशुद्धियों को शुद्ध करना। शब्द और वाक्यस्तर पर [illegible] करना।
४. पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता और स्वरूप।
५. राजभाषा विषयक सरकारी नीति का क्रमिक परिचय, कार्यालयों में हिंदी प्रयोग की आवश्यकता और वर्तमान स्थिति।
६. पत्रलेखन के विविध प्रकारों का परिचय–व्यापारिक, आदेश परिचय, शिकायत, भुगतान–साख, आढत, आवेदन, वेतन–धन और सरकारी पत्रों के विविध रूप।
७. टिप्पणी लेखन और संक्षेपण – स्वरूप, व्याप्ति, विशेषताएँ और प्रकार।

प्रथम सत्र

१. हिंदी भाषा की प्रयुक्तियाँ – साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक बोलचाल संबंधी।
२. हिंदी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ – संवाद शैली, पत्रलेखन शैली, विवरणात्मक शैली आदि।
३. देवनागरी लिपि – स्वरूप, गुण-दोष, सुधार, मानक वर्णमाला, टंकन, मुद्रण, कॉम्प्युटर की सुविधा।
४. अंक – नागरी अंक, भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप, अंको की वर्तनी, शुध्द लेखन

५. वर्तनी–समस्याएँ, मानक रूप देने के प्रयास, भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय : केंद्रीय निदेशालय के वर्तनी संबंधी नियम।
वर्तनी [वर्ण, शब्द, अनुस्वार–अनुनासिक, ह्रस्व, दीर्घ, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आदि की अशुध्दियाँ और उनका शुध्दीकरण]।

६. अशुध्दियों का शुध्दीकरण – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि के प्रयोग एवं संरचना संबंधी भूलें। पदक्रम, कर्ता–क्रिया के अन्वय, कर्म–क्रिया के अन्वये, विशेषण–विशेष्य के अन्वय संबंधी भूलें। रचनागत भूलें। अस्पष्ट एवं भ्रामक वाक्य, शिथिल वाक्य, असंगत वाक्य। अन्य भाषा प्रभाव की भूलें।

७. पारिभाषिक शब्दावली – आवश्यकता, शब्द निर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, शब्द निर्माण प्रक्रिया अशुध्दियों के प्रकार, वाक्यों में सही प्रयोग।

–: द्वितीय सत्र :–

१. राजभाषा हिंदी विषयक सरकारी निति – आरंभ से आजतक विकास के चरण। विविध कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति।

२. कार्यालयीन पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य एवं वाक्यांश : वाक्यों में प्रयोग।

३. व्यापारिक पत्रलेखन – स्वरूप। प्रकार–

[१] पूछताछ – माल, सुविधाएँ, मूल्यसूची, शर्तें।
[२] आदेश, माल के आदेश प्राप्त करने, देने, रद्द करने आदि के पत्र उत्तर–प्रत्युत्त
[३] संदर्भ या परिचय पत्र ।
[४] शिकायती पत्र – माल न भेजने, कम भेजने, घटिया या खराब भेजने, खराब संवेष्टन, विलंब, अधिक मूल्य, आदि के संबंध में।
[५] तकादे या भुगतान संबंधी पत्र।
[६] साखपत्र।
[७] आढत या एजेन्सी संबंधी पत्र।

४. आवेदन या प्रार्थना पत्र –

१] नौकरी के लिए।
२] कार्यालयीन–छुट्टी [छुट्टीयों के विविध प्रकार], स्थानांतरण, स्थायीकरण, पदनाम, कार्य परिवर्तन, सरकारी मकान आदि।
३] वेतन तथा धनसंबंधी – वेतन/वेतनवृध्दि, अतिरिक्त वेतन, भत्ते, समयोपरि भत्ते, विशेष वेतन, पदोन्नति, वरिष्ठता, भविष्य निधि, अग्रिम धन, विविध भुगतानों से संबंधित आवेदन पत्र।

५. सरकारी पत्राचार – स्वरूप, विविध प्रकार और उनके प्रारूप–

१] पत्र
२] परिपत्र
३] ज्ञापन
४] कार्यालय ज्ञापन
५] कार्यालय आदेश
६] अर्ध सरकारी पत्र
७] अनौपचारिक पत्र
८] पृष्ठांकन
९] अधिसूचना
१०] संकल्प
११] प्रेस विज्ञप्ति, प्रेसनोट
१२] तार
१३] मितव्यय पत्र
१४] अनुस्मारक
१५] सूचना।

६. टिप्पणी लेखन – उद्देश्य, सिध्दान्त विशेषताएँ, प्रकार और स्वरूप : सूक्ष्म टिप्पणी, सामान्य टिप्पण, संपूर्ण टिप्पण, अनुभागीय टिप्पण, नित्य क्रमिक टिप्पण, अनौपचारिक टिप्पण, आनुषंगिक टिप्पण आदि।
७. संक्षेपण – उद्देश्य, संक्षेपण विधि, प्रकार – १] स्वतंत्र संक्षेपण, २] प्रवहमान संक्षेप इ. ३] तालिका संक्षेप, स्वयंपूर्ण संक्षेप।

संदर्भ ग्रंथ :–

१. भाषा और समाज – डॉ. रामविलास शर्मा
२. भाषा और दर्शन – डॉ. राजपाल सिंह
३. हिंदी भाषा कुशलता – श्यामजी गोकुल वर्मा
४. हिंदी उच्चारण और वर्तनी – डॉ. भगवती प्रसाद
५. पारिभाषिक शब्द संग्रह – केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली
६. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण – केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
७. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण – प्रा. विराज
८. आदर्श कार्यालय पध्दति – मन्नूलाल द्विवेदी
९. अधिकार पत्र व्यवहार – परमानंद गुप्त
१०. आवेदन प्रारंभ – शिवनारायण चतुर्वेदी।

प्रश्नपत्र [छ] : विशेषास्तर – वैकल्पिक
लोकसाहित्य

उद्देश्य :–

विद्यार्थीयों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना–

१. लोकसाहित्य के स्वरूप को समझाते हुए उसके अध्ययन का महत्व स्पष्ट करना।
२. लोकसाहित्य की विभिन्न विधाओं के अध्ययनद्वारा लोकजीवन में उसकी व्यापकता को समझाना।
३. लोकसाहित्य का सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिकमहत्व बताकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरणा देना।

पूर्वार्ध

१. "लोक" शब्द की व्याख्या, लोकसाहित्य की प्रमुख परिभाषाएँ, लोकवार्ता, लोकसाहित्य और, साहित्य में अंतर और साम्य, लोकसाहित्य के अध्ययन का महत्व।
२. लोकसाहित्य का अन्यशास्त्रों से संबंध – इतिहास, पुरातत्व, मानवविज्ञान, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान, धर्मशास्त्र।
३. लोकसाहित्य का संकलन – उद्देश्य, विभिन्न पध्दतियाँ और बाधक तत्व।
४. लोकगीत – परिभाषा निर्माण तत्व और विशेषताएँ, लोकगीतों का वर्गीकरण, लोकगीत और अन्य गीतों में अंतर, लोकगीतों के प्रमुख प्रकार संस्कार गीत–[सोहर जन्म], मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गौना, मृत्युगीत] कजली, होली, लोरी

..। १९

साकनगीत, लावनी।

द्वितीय सत्र

१. लोकगाथा – उत्पत्तिविषयक सिध्दान्त, प्रमुख लक्षण, लोकगाथाओं का वर्गीकरण किसी एक प्रसिध्द लोकगाथा का सामान्य परिचय।

२. लोककथा – लोककथा के मूलस्त्रोत, परिभाषा, लोककथा की उत्पत्तिविषयक विभिन्नवाद, लोककथा में अभिप्राय, लोककथा की विशेषताएँ, वर्गीकरण।

३. लोकनाट्य–भारत में लोकनाट्य की परंपरा, परिभाषा लक्षण, लोकरंगमंच, लोकनाट्य और नाटक में अंतर। भारत के प्रमुख लोकनाट्य–रामलीला, रासलीला, भवई, ख्याल, यक्षगान, तमाशा, जत्रा, साँग, नौटंकी, कुचिपुडी, ललित।

४. लोकोक्तियाँ – मुहावरे, पहेलियाँ, मुकरियाँ, सूक्तियाँ, ढकोसला, चुटकुले, मंत्र टोना।

५. लोकसाहित्य – भावाभिव्यक्ति और कलात्मक सौंदर्य।

६. लोकसाहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भारतीय लोकसाहित्य – श्याम परमार
२. लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
३. लोकसाहित्य –सिध्दान्त और प्रयोग – डॉ. श्रीराम शर्मा
४. लोकसाहित्य के प्रतिमान – डॉ. कुंदनलाल उप्रेति
५. खडी बोली का लोकसाहित्य – डॉ. सत्यागुप्त
६. लोकसाहित्य – विज्ञान – डॉ. सत्येंद्र
७. लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येंद्र
८. लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
९. महाराष्ट्र का हिंदी लोककाव्य – डॉ. कृष्ण दिवाकर
१०. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन – डॉ. कुलदीप
११. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. विद्या चौहान
१२. हमारे संस्कार गीत–राजरानी वर्मा
१३. लोककथा परिचय – नलिनीविलोचन शर्मा
१४. लोककथाविज्ञान – श्रीचंद्र जैन
१५. लोकधर्मी नाट्यपरंपरा – डॉ. श्याम परमार
१६. लोकनाट्य – परंपरा और पंक्तियाँ – डॉ. महेंद्र भानावत
१७. भारत के लोकनाट्य – डॉ. शिवकुमार मधुर
१८. महाराष्ट्र का लोकधर्मी नाट्य – डॉ. दुर्गा दीक्षित
१९. लोकसाहित्य – इंद्रदेव सिंह
२०. लोकसाहित्य विमर्श – डॉ. श्याम परमार
२१. भारतीय लोकसाहित्य की रूपरेखा – दुर्गा भागवत/अनु. डॉ. स्वर्णकांता स्वर्णिम।